

मर्छों पूरब से पश्चिम को तू ही बही है
 बही है बही है बही मर्छों बही
 मर्छों बही है बही है बही मर्छों बही
 मर्छों रेवा की महिमा को सबनें कही है
 कही है कही है कही मर्छों कही
 मर्छों कही है कही है कही मर्छों कही

कभी दुर्गा काली कभी अम्बिका
 कभी स्वप्नर वाली कभी चंडिका
 तुम्हीं गौरी मैया और नारायणी
 कभी झारदा मर्छों और भवतारणी
 मर्छों शक्ति तू बनकर हमेशा रही है
 रही है रही है रही मर्छों रही
 मर्छों रही है रही है रही मर्छों रही

मर्छों पूरब से-----

ये सूरज, ये चंद्रा, ये तारे गगन
 ये झरने, ये नदियाँ समन्दर चमन
 ये दुनियाँ भी करती हैं इनको नमन
 ये सब देखकर मन हुआ है मगन

तेरी, रचना का कोई मर्क नही है
 नही है नही है नही मर्क नही
 मर्क नही है नही है नही मर्क नही

मर्क प्रब से-----

जब तक जिऊँ मर्क अभयदान दो
 ये मस्तक झुके न मुझे ज्ञान दो
 हम जन्मों के दुखिया तुम्हारे तो हैं
 फिर अपनी से मिलकर हम हारे तो हैं
 इस दिल में जो शक्ति मर्क तेरी रही है
 रही है रही है रही मर्क रही
 मर्क रही है रही है रही मर्क रही

मर्क प्रब से-----

हूँ अज्ञानी, अंजाना मुझसा कहाँ
 ये माया जो होड़ी जहाँ का तहाँ
 लुझे होड़कर मर्क मैं जाऊँ कहाँ
 तेरी शक्ति, को भूना क्यों सारा जहाँ
 तेरे बालक "श्री बाबा श्री" ने तेरी अंगुली गड़ी है
 गड़ी है गड़ी है गड़ी मर्क गड़ी
 मर्क गड़ी है गड़ी है गड़ी मर्क गड़ी

मर्क प्रब से-----